Volume-12, No. 2, Aug-2025, pp.Hin. 27-29

जनपद जौनपुर के सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

डा.जयप्रकाश तिवारी, प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान भारत।

प्रस्तावना–
शिक्षा की दिशा आध्यात्मवाद से जहाँ भौतिकवाद की ओर परिवर्तित हुई तो शिक्षक का स्थान, शिक्षा का प्रशासन तथा व्यवस्था भी इससे प्रभावित हुई परन्तु इन परिस्थितियों में शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि भी प्रभावित हुई है। जब तक एक शिक्षक अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं होगा तब तक वह अपने कार्य के प्रति पूर्णरूप से कर्तव्यनिष्ठ नहीं हो सकता।

मुख्य शब्द– कार्य संतुष्टि, शोध के उद्देश्य, शोध की मुख्य परिकल्पनाए, शोध के निष्कर्ष

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–
आज शिक्षा के स्तर को सुधारने का प्रयास तो किया जा रहा है। लेकिन असल समस्या को सुधारने की पहल कहीं से नहीं हो रही है। यह बात अलग है कि एक समय था जब सरकारी शिक्षण संस्थाओं से निकले विद्यार्थी ही देश के शीर्ष पदों पर पहुँचते थे। कर्तव्यनिष्ठ शिक्षकों ने सीमित संसाधनों में छात्रों के बौद्धिक स्तर एवं व्यक्तित्व में विकास किया। आज की परिस्थितियों में यह बेहद दुष्कर है और ऐसे में मध्यम और निम्न वर्ग के लोगों के लिए शिक्षा का नया क्षितिज उनकी पहुँच से दूर होना स्वाभाविक है। उपरोक्त शैक्षिक परिस्थितियों के कारण एक शिक्षक को भी इनसे दो चार होना पड़ता है क्योंकि जब विद्यालय का वातावरण अच्छा होता है तभी एक शिक्षक अपना शिक्षण पूर्ण रूप से कर सकेगा।
परन्तु प्रबन्धन आदि भी समस्याओं के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं में शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि प्रभावित हो जाती है। क्योंकि गैरसरकारी विद्यालयों में शिक्षिकाओं को अच्छा वेतन नहीं मिलता है और न ही उनको सरकारी शिक्षकों की तरह अन्य वेतन भत्ते प्राप्त होते हैं। जिस कारण गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि प्रभावित होती है। जिस कारण वो अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर पाती हैं।

3. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–
प्रस्तुत शोध विषय पर निम्न शोधार्थियों ने शोध कार्य किया है। जिसमें सक्सेना, राजेश (2003), त्रिपाठी एल0ए0के0 (2006), सिंह, एच0एल0 (2008) तथा सिंह, अजीत (2011), चौधरी, एस0 (2012), मेहराज दिन दार (2013), कुसुम चन्दाना (2014), एल रालटे (2000), अशहर तौसीफ (2015) सैफी, एम0 (2016), तथा पमेला रबुरू (2017) प्रमुख हैं।

समस्या कथन–
माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

शोध विधि– वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श– जनपद जौनपुर के 20 माध्यमिक विद्यालयों से 5–5 शिक्षिकाओं यानि कुल 100 शिक्षिकाओं को वर्तमान शोध हेतु लिया गया है।

चर–
स्वतन्त्र चर– कार्य सन्तुष्टि
आश्रित चर– शिक्षिकायें

अध्ययन के उद्देश्य–

- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग के शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनायें–

- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
- माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

परिकल्पनाओं की व्याख्या एवं विश्लेषण

तालिका संख्या–1 माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शिक्षिकायें	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	40	186.07	7.62	21.48	3.16	पाया जाता है।
गैर सरकारी	60	164.59	6.05			

0.01 स्तर पर * = 2.60,

तलिका संख्या–1 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 186.07 व 164.59, (7.62 व 6.05) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य df 21.48 पर 3.16 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या–1 अस्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–2 माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

ग्रामीण शिक्षिकायें	सं.	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	23	185.68	6.84	20.42	2.73	पाया जाता है।
गैर सरकारी	27	165.26	4.89			

0.01 स्तर पर * = 2.64,

तालिका संख्या–2 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 185 व 165.26, (6.84 व 4.89) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य df 48 पर 2.73 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या–2 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–3

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

शहरी शिक्षिकायें	सं.	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	27	180.98	7.01	20.38	3.06	पाया जाता है।
गैरसरकारी	23	160.66	5.11			

0.01 स्तर पर * = 2.64,

तालिका संख्या–3 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः180.98 व 160.66, (7.62 व 5.11) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य df 20.38 पर 3.06 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या–3 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–4

माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

कला वर्ग की शिक्षिकायें	सं.	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	24	185.60	7.45	20.04	2.68	पाया जाता है।
गैर सरकारी	26	165.54	5.90			

0.01 स्तर पर * = 2.64,

तालिका संख्या–4 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक

विचलन क्रमशः 185.60 व 165.54, (7.45 व 5.90) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य df 20.04 पर 2. 68 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या–4 स्वीकार की जाती है।

तालिका संख्या–5

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं	सं.	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यान्तर	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
सरकारी	23	190.08	6.92	25.38	3.23	पाया जाता है।
गैर सरकारी	27	165.67	5.27			

0.01 स्तर पर * = 2.64,

तालिका संख्या–5 के अनुसार सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन क्रमशः 190.08 व 165.67, (6.92 व 5.27) प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों के मध्य df 25.38 पर 3. 23 क्रान्तिक अनुपात प्राप्त हुआ। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 0.05 व 0.01 स्तर के मानों से अधिक है। इससे स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः हमारी परिकल्पना संख्या–5 स्वीकार की जाती है।

सारांश

माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

शोध के निष्कर्ष–

1. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी ग्रामीण शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी शहरी शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
4. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी कला वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।
5. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत सरकारी एवं गैर सरकारी विज्ञान वर्ग की शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता एस०पी०, ''शिक्षा मनोविज्ञान'' शाखा प्रकाशन मेरठ।
2. युग किबंल, शिक्षा मनोविज्ञान की आधार शिला, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. शर्मा आर०, चाइल्ड साइकोलॉजी, एटलांटिक प्रकाशन एवं वितरक, दिल्ली।
4. मंगल एस०के०, शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. कपिल एच.के., अनुसंधान विधियाँ, भार्गव प्रिन्टर्स, आगरा।
6. त्रिपाठी, शालिग्राम, शिक्षण व्यवहार, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.
7. पांडे, आर0एस0, शिक्षा की समसामयिक समस्यायें, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा